International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 3 Ser. I || March 2019 || PP 62-64

स्वामी विवेकानन्द का मानवादी चिन्तन

डॉ0 आदित्य प्रकाष सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति शास्त्र
राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
काशीपुर, (ऊधम सिंह नगर)।

''मनुष्य का गौरव स्वार्थ साधना में नही अपितु विष्व कल्याण के लिए आत्म बलिदान में निहित है।
स्वामी विवेकानन्द।

सारांषः–

मानववाद एक ऐसा जीवन पद्वति है जिसमें मानव की गरिमा और मूल्य को विशेष महत्व दिया जाता है। यह दृष्टिकोण मनुष्य के अस्तितव को ही जगत की सबसे मूल्यवान तत्व के रुप में मान्यता देता है। आधुनिक भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में स्वामी विवेकानन्द तथा गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर को मानववादी विचारकों में सामदृत किया जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने मानवमात्र की सेवा का उपदेश दिया तथा इसका व्यावहारिक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। वे मानवप्रेमी थे। वैदान्तिक अखण्डत्व के आध्यात्मिक आधार पर उन्होने शान्ति और विश्ववन्धुत्व की स्थापना का अथक प्रयास किया। स्वामी जी के विचार किस प्रकार सांस्कृति राष्ट्रवाद का निर्माण करते है। मानववाद चिन्तन में उनके दृष्टिकोण किस प्रकार सहायक है। नवयुवकों के लिए वे कितने प्रेरणादायी है। इन्ही विचारों को शोध पत्र का विषय बनाया गया। उनकी दार्शनिक कृतियों तथा समय–समय पर उनके द्वारा दिये गये ओजस्वी व्याख्यान को उनके विचारों की स्त्रोत सामग्री बनाया गया हैं। शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के विचारो को जनुलभ बनाना है। जो भारत निर्माण में सहायक हो सकें।

अध्ययन विधिः–

ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्वतियों को शोधपत्र के अध्ययन विधि के रूप में अपनाया गया।

मुख्य शब्दः– राष्ट्रवाद, मानववाद, समाजसेवा, प्रखर, प्रतिभा, वैद्विकतावाद, सराहनीय।

विवेक और आनन्द के अनुपम समन्वय, उच्चकोटि के सन्यासी महान दार्शनिक, राष्ट्रभक्त, अद्वैत वेदान्त के अनुपम व्याख्याता हिन्दू धर्म तथा श्रेष्ठता के प्रचारक, प्रसिद्ध समाज सुधारक नवयुवकों के प्रेरणास्त्रोत, नारी स्वतन्त्रता के समर्थक, मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए सतत प्रयत्नशील हिन्दू नेपोलियन के रूप में समादृत, रामकृष्ण मिशन के संस्थापक स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी,1863 को बंगाल प्रान्त के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था।

आधुनिक भारत के इतिहास में नेत्त्व एवं राष्ट्रीय सेवा के क्षेत्र में बंगाल की गौरवशाली परम्परा रही है। बंगाल की धरती ने विभिन्न देश भक्तों साहित्यकारों वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों को जन्म दिया है। बंगाल भारतीय राष्ट्रवाद का अग्रदूत रहा है। महान समाज सुधारक राजाराम मोहन राय, वैज्ञानिक
जगदीश चन्द बोस, महान साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचन्द्र चटोपध्याय, बन्दे मातरम् के प्रणेता बंकिमचन्द्र चटार्जी, केशवचन्द, विद्यासागर, प्रफूल्ल चन्द राय, अरविन्द घोष, विपिनचन्द पाल, एस.एन. बनर्जी, स्वराज्य पार्टी के संस्थापक देश बन्धु चितरंजन दास, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसी महान विभूतियॉ बंगभूमि की देन है। ऐसी भी मान्यता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की पहली किरण बंगाल से ही प्रस्फूटित हुई। इसीलिए कहा जाता है कि बंगाल जो आज सोचता है। इसी गरिमामयी बंगभूमि में विवेकानन्द का जन्म हुआ।[1]

समृद्ध परम्परा के प्रतिनिधि स्वामी विवेकानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतिव अद्वितीय हैं वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। इनका एक उदाहरण यही है कि विश्वकोष ब्रिटेनिका के कुल 20 खण्डों में प्रथम 11 का उन्होने विद्यार्थी जीवन में ही अध्ययन कर लिया था।[2] स्वामी विवेकान्द कलकत्ता विश्वविद्यालय के ऐसे प्रतिभावान स्नातक थे, जिनकी प्रतिभा से वहॉ के अध्यापकगण भी प्रभावित थे। उन्हें यह विश्वास था कि वह नवयुवक आगे चलकर एक दिन अवश्य ही प्रकाश स्तम्भ की भॉति देश का मार्ग दर्शन करेगा। **''और उठो जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक चलते रहो''** का सन्देश दिया। कुछ समय पश्चात् गुरुओं की आशा के अनुरुप ही विवेकानन्द ने भारत का गौरव बढ़ाने तथा भारतीय संस्कृति तथा धर्म ध्वज को वैश्विक पटल पर फहराने मे महत्वपूर्ण योगदान किया। स्वामी जी ने अमेरिका के शिकागो नामक नगर में 11 सितम्बर,1898 ई0 को हुये विश्व धर्म सम्मेलन में सनातन धर्म और भारतीय दर्शन पर एक अद्वितीय वकतव्य दिया। जिसका पाश्चात्य जगत पर चमत्कारिक प्रभाव पड़ा। स्वामी जी ने बहनों और भाईयों के सम्बोधन में अपना व्याख्यान प्रारम्भ कर सबका मन मोह लिया। विदेश प्रवास के दौरान उन्होंने अमेरिका के अतिरिक्त यूरोप के भी कई देशों का भ्रमण कर हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की श्रेष्टता का प्रचार किया।[3] उन्होने उदघोष किया की सनातन धर्म विश्व को सदभावना और सहिगणुता का सन्देश देता है।[4] स्वदेश लौटने पर 09 दिसम्बर,1896 ई0 को बैगलूर में उन्होने **''रामकृष्ण मिषन''** की स्थापना की। यह महत्वपूर्ण संस्था आज भी पीड़ित और दुःखी जनता की आशा का केन्द्र है। धर्म प्रचार के

साथ–साथ शिक्षा तथा समाजसेवा के क्षेत्र मे भी इसने सराहनीय कार्य किया है और आज भी यहॉ स्वामी जी के विचारों का व्यावहारिक प्रयोग किया जाता है। यहॉ उपदेश नहीं सेवा और समर्पण देखने को मिलता है।

स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद की व्याख्या धार्मिक सन्दर्भ में किया। उनके राष्ट्रवाद का आधार धर्म है। उनके राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि धर्म है। इसी सन्दर्भ में उन्होने सशक्त राष्ट्र की परिकल्पना की। स्वाधीनता के प्रति वे सदैव आतुर रहते थे। उनकी स्वतन्त्रता की अवधारणा के राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक आयाम थे। उनमें निर्भीकता और भारतीयता का अनुपम समन्वय था। वस्तुतः स्वामी जी भारतीयता के प्रतिमान हैं वे भारतीय संस्कृति और भारत की अस्मिता की रक्षा के प्रति समर्पित थे। वे एक उत्साही राष्ट्रवादी थे और राष्ट्रीयता उनकी धमनियों में प्रवाहित होती थी।

वे एक सच्चे समाजवादी थे। उनका समाजवाद सर्वागीण विकास की बात करता है। उन्होंने शोषण अस्पृश्यता तथा जाति व्यवस्था का घोर विरोध किया। उनका समाजवाद मार्क्स की समाजवादी विचारों से साम्य नहीं रखता। विवेकानन्द प्राचीन भारत की उस वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे जिसमें सामाजिक सद्भाव सहिष्णुता और समन्वय का मेल था। वे ब्राम्हमणों के बैद्धिकतावाद तथा क्षत्रियों के पुरुषार्थ, वैश्यों के धैर्य तथा शुद्रों की सेवाभाव का समन्वय चाहते थे। वे सामाजिक सहयोग में विश्वास करते थे संघर्ष मे नहीं। स्वामी जी सामाजिक सौहार्द तथा सामाजिक, साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए सदैव प्रयासरत रहे। वे इस्लाम की बन्धुता तथा हिन्दुओं की आध्यात्मिकता से नये भारत का निर्माण चाहते थे।

स्वामी जी सामाजिक तथा धार्मिक सहिष्णुता के प्रबल समर्थक थे उनका मानना था कि सभी धर्मों का मूल एक ही हैं उन्होंने स्पष्ट किय कि जैसे विभिन्न नदियॉ भिन्न–भिन्न स्त्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं उसी प्रकार हे **प्रभो भिन्न–भिन्न रास्ते से जाने वाले लोग तुझमे ही मिल जाते है।** उन्होंने गीता के एक श्लोक का उद्धरण दिया–**'ये यथा मा प्रयद्यन्ते तास्तथेव भजाम्पहम।**[6] जो कोई मेरी ओर जिस किसी भी प्रकार से आता है मै उसे प्राप्त होता हूँ। स्वामी जी का व्यक्तित्व आकर्षक था और कार्यक्षेत्र विस्तृत। दीन–दुखियों की सेवा करना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। **''जीव ही षिव है इसलिए जीव की पूजा करना ही षिव की पूजा करना है।''** वे दरिद्र की सेवा के व्यावहारिक पैरोकार थे। नर सेवा को नारायण सेवा मानते थे। वे कहते थे 'मैं ऐसे धर्म को नही मानता जो अपने पड़ोसी को भूखे सोने के लिए विवश करता है।' वे दरिद्रनाथ की सेवा के पक्षधर थे। उनके दरिद्रनाथ की सेवा भाव का उत्कर्ष पं0 दीनदयाल उपाध्याय के 'अन्तोदय' की विचार धारा में भी मिलता है। विवेकानन्द के अनुसार धर्म एक नैतिक बल है जो व्यक्ति और राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है।[7] दरिद्रनारायण की सेवा की 'अमृतवाणी उनकी प्रसिद्ध संस्था 'रामकृष्ण मिशन का बीज मन्त्र है।'

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन मुख्यतया धर्म पर आधारित था। उनके लिए धर्म भारत के राष्ट्रीय जीवन के समग्र संगीत का मुख्य स्वर था। वे व्यक्ति की गरिमा में विश्वास करते थे। **'उठो जागो और अपने लक्ष्य प्राप्ति तक न रुको'** नवयुवकों के लिए यही उनका सन्देश था। स्वामी जी ने भारत की सुषुप्त आत्मा को जागृत किया। स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय नवयुवको में साहस, शक्ति तथा स्फूर्ति का संचार किया। उनका मनोबल बढ़ाया और उनमें आत्म चेतना जागृत किया। वे कहा करते **थे 'षक्ति जीवन है और दुर्बलता मृत्यु।'** वे भारतीय जनमानस में उत्साह देखने को आतुर थे। प0 जवाहरलाल नेहरु ने भारत की खोज में लिखा है कि स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का सार था 'अभयम'।[8] स्वामी जी का समग्र दर्शन मानव प्रेम एवं मानव सेवा का दर्शन हैं उन्होंने मानव जाति को विश्व बन्धुत्व परस्पर सहायता, सहयोग व सम्न्वय सामन्जस्य का सन्देश दिया।[9]

स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण उदार एवं व्यापक था। भारत की उन्नति के लिए वे पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति का ज्ञान आवश्यक समझते थे और देश की समृद्धि के लिए उसका भरपूर सदुपयोग चाहते थे। लेकिन पश्चिमी समृद्धि के याचक बनना नहीं चाहते थे। वे परिश्रम मे विश्वास रखते थे।[10] स्वामी जी आध्यात्मिक प्रगति के साथ–साथ देश की मौलिक उत्थान के भी पैरोकार थे। उन्होंने पाश्चात्य और पौर्षत्य दोनो संस्कृतियों की अच्छी बातों के समन्वय का प्रयास किया। पश्चिम को उन्होंने भारतीय संस्कृति की उपयोगिता बतायी तथा उसका अनुसरण करने का सन्देश दिया। वस्तुतः विवेकानन्द ने धर्म तथा विज्ञान के सामन्जस्य की आवश्यकता पर बल दिया।

स्वामी जी बहुत ही अल्पायु में काल कवलित हो गये, 04 जुलाई,1902 को 39 वर्ष की अवस्था में अपना शरीर त्याग दिया। स्वामी जी लम्बी जिन्दगी नही जीये, किन्तु बड़ी जिन्दगी अवश्य जीये।

निष्कर्षः–

आज स्वाधीनता सेनानियों तथा महापुरुषों को श्रद्धांजति अर्पित की जा रही हैं। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली तब होगी, जब हम उनके विचारों को व्यवहार में लाए। स्वामी जी भारतीय युवाओं के ही नही अपितु विश्व के युवाओं के प्रेरणा पूंज हैं। उनके विचारों को आत्मसात् कर हम **स्वच्छ भारत, स्वस्थ्य भारत और सषक्त भारत** का निर्माण कर सकते हैं।

सन्दर्भिकाः–

1. ओ0पी0 गाबा, राजनीतिक चिन्तन की रुप रेखा, मयूर पेपर वैक्स, 1996 पृष्ठ 378।
2. स्वामी निखिलानन्द, स्वामी विवेकानन्द एक जीवनी, अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कोलकाता। 1989 पृष्ठ 7।
3. विवेकानन्द साहित्य संचमन, षष्ठ संस्करण, बंगाली आफसेअ नागपुर, पृष्ठ 2।
4. वही।
5. शिवमहिमा स्त्रोतम् ।। 6।।
6. गीता, 4, 11

7. तेजसानन्द स्वामी, स्वामी विवेकानन्द एण्ड हीज मैसेज, बेल्लूरमठ 1965, पृष्ठ 57
8. हंसराज योद्धा, स्वामी विवेकानन्द, राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली, 1993 पृष्ठ 109